shri shaligram ji ki aarti

शालिग्राम सुनो विनती मोरी यह वरदान दयाकर पाऊँ ।

प्रात समय उठि मज्जन करके प्रेम सहित स्नान कराऊँ ।

चन्दन धूप दीप तुलसीदल वरण–वरण के पुष्प चढ़ाऊँ ॥१॥

तुम्हरे सामने नृत्य करूं नित प्रभु घंटा शंख मृदंग बजाऊं।

चरण धोय चरणामृत लेकर कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ सिधाऊं ॥२॥

जो कुछ रूखा–सूखा घर में भोग लगाकर भोजन पाऊँ।

मन बच कर्म से पाप किये जो परिक्रमा के साथ बहाऊँ ॥ ३ ॥

ऐसी कृपा करो मुझ पर जम के द्वारे जाने न पाऊँ ।

माधोदास की विनय यही है हरि दासन को दास कहाऊँ ॥४॥